

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, धर्मशास्त्र, सत्र 19, ईश्वर के कार्य, सृष्टि और प्रोविडेंस

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र, या ईश्वर पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 19 है, ईश्वर के कार्य, सृष्टि और विधान।

हम धर्मशास्त्र, स्वयं ईश्वर के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, और हम ईश्वर के कार्यों की ओर बढ़ते हैं।

हमने अध्ययन किया है कि कैसे ईश्वर पवित्र त्रिमूर्ति है, तीन व्यक्तियों में एक ईश्वर। हमने ईश्वर के गुणों का अध्ययन किया है, जो असंप्रेषणीय और संप्रेषणीय दोनों हैं। अब हम उसके सृजन कार्यों, विधान का अध्ययन करेंगे।

हम इस पाठ्यक्रम में उनके कार्य, उनके छुटकारे के कार्य और पराकाष्ठा को शामिल नहीं करते हैं। लेकिन हम स्वर्गदूतों, शैतान और राक्षसों का अध्ययन करते हैं, क्योंकि यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें पतित प्राणियों के रूप में नहीं बनाया था, वास्तव में, कुछ स्वर्गदूतों ने विद्रोह किया, जैसा कि हम देखेंगे।

आइए हम एक साथ प्रार्थना करें। दयालु पिता, आपके वचन के लिए, आपकी सच्चाई के लिए, आपके पुत्र के लिए, आपकी आत्मा के लिए धन्यवाद। हमें आशीर्वाद दें, हम प्रार्थना करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से अनन्त मार्ग पर ले चलें। आमीन।

परमेश्वर के कार्य। महिमावान परमेश्वर को उसके कार्यों से जाना जाता है, जो उसके उद्देश्यों को पूरा करते हैं और उसकी महिमा को प्रदर्शित करते हैं।

उनकी कई रचनाएँ हैं, लेकिन चार मुख्य हैं। सृजन, ईश्वरीय कृपा, मुक्ति या मोक्ष, और पूर्णता। व्याख्यानों की अन्य श्रृंखलाएँ मुक्ति और पूर्णता पर केंद्रित हैं।

यहाँ, हम परमेश्वर के सृष्टि और विधान के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। परमेश्वर सब कुछ बनाता है, सृष्टि का ईसाई सिद्धांत। बाइबल परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी के निर्माण से शुरू होती है।

बाइबल परमेश्वर द्वारा एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी लाने के साथ समाप्त होती है। उत्पत्ति 1:1 में, परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की। प्रकाशितवाक्य 21 और 22, 21 में आरंभ में कहा गया है, "और मैंने देखा, और मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी।"

इस प्रकार, ईश्वर के सृष्टिकर्ता होने का सिद्धांत बाइबिल की कहानी को रेखांकित करता है और ईसाई धर्मशास्त्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके मूल में, सृष्टि का सिद्धांत यह है कि ईश्वर, किसी भी पूर्व-मौजूद सामग्री के उपयोग के बिना, जो कि एक्स निहिलो है, लैटिन में जिसका

अर्थ है कुछ भी नहीं, वह सब कुछ अस्तित्व में लाता है। सृष्टि ईश्वर द्वारा अपनी उत्कृष्टता को संप्रेषित करने का एक पूर्णतः स्वतंत्र कार्य है।

जैसा कि हमने पहले देखा था जब हमने परमेश्वर की अनंतता, भजन 92 और पद 2 का अध्ययन किया था, तो केवल उसी की कोई शुरुआत नहीं है। भजन 90 पद 2, अनंत काल से अनंत काल तक, आप परमेश्वर हैं। परमेश्वर ने वह सब बनाया है जो मौजूद है, जिसमें प्रकाश, पृथ्वी, आकाश, जल, वनस्पति, समुद्री जीवन, जानवर, स्वर्गदूत और बाकी सब कुछ शामिल है। उत्पत्ति 1:1-25, भजन 148:1-5, कुलुस्सियों 1:16, प्रकाशितवाक्य 4:11।

मैं उनमें से एक को पढ़ना चाहता हूँ, भजन 148:1-5। स्तुति के हलल भजनों में से एक जो भजन संहिता 148 का समापन करता है। भजन 148:1, यहोवा की स्तुति करो, स्वर्ग से यहोवा की स्तुति करो, ऊंचाइयों में उसकी स्तुति करो, उसके सभी स्वर्गदूतों की स्तुति करो, उसकी सभी सेनाओं की स्तुति करो, सूर्य और चंद्रमा की स्तुति करो, हे सभी चमकते सितारों की स्तुति करो, हे सबसे ऊँचे स्वर्ग और हे आकाश के ऊपर के जल की स्तुति करो।

वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसने आज्ञा दी और वे बनाए गए, और उसने उन्हें हमेशा और हमेशा के लिए स्थापित किया। उसने एक आदेश दिया, और यह नहीं टलेगा। पृथ्वी से यहोवा की स्तुति करो, हे बड़े-बड़े समुद्री जीव-जन्तुओं और सभी गहराइयों, आग और ओलों, बर्फ और धुंध, तूफानी हवा, जो उसका वचन पूरा करती है, पहाड़ों और सभी पहाड़ियों, फलदार वृक्षों और सभी देवदारों, पशुओं और सभी घरेलू पशुओं, रेंगने वाले जीवों और उड़ने वाले पक्षियों, पृथ्वी के राजाओं और सभी लोगों, राजकुमारों और पृथ्वी के सभी शासकों, जवानों और युवतियों एक साथ, बूढ़ों और बच्चों।

वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि केवल उसका नाम ही महान है; उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश से ऊपर है; उसने अपने लोगों के लिए एक सींग खड़ा किया है, उसके सभी संतों की स्तुति, इस्राएल के लोगों के लिए जो उसके निकट हैं, यहोवा की स्तुति करो। मैंने आगे बढ़कर सभी 14 श्लोक पढ़े क्योंकि यह सृष्टि के उस विषय पर विस्तार से बताता है। परमेश्वर पुरुषों और महिलाओं के निर्माण में भी सीधे तौर पर शामिल है, जिन्हें वह विशेष रूप से अपनी छवि में बनाता है।

उत्पत्ति 1:27, परमेश्वर ने उन्हें अपने स्वरूप में बनाया, नर और नारी करके उसने उन्हें बनाया। उत्पत्ति 1:27 और 27, मरकुस 10:6, रोमियों 5:12 से 21, याकूब 3:9 से 12। एक बार फिर, परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को बनाया, खास तौर पर अपने स्वरूप में।

उत्पत्ति 1:27, 27, मरकुस 10:6, रोमियों 5:12 से 21, याकूब 3:9 से 12. सारी सृष्टि परमेश्वर की अनंत योजना के डिजाइन और क्रम को दर्शाती है और परमेश्वर की बुद्धि से अस्तित्व में आती है। यिर्मयाह 10:12, परमेश्वर की इच्छा, प्रकाशितवाक्य 4:11 और परमेश्वर का वचन, भजन 33:6 से 9. परमेश्वर की बुद्धि, यिर्मयाह 10:12, परमेश्वर की इच्छा, प्रकाशितवाक्य 4:11, परमेश्वर का वचन, भजन 33:6 से 9. सृष्टि परमेश्वर को प्रकट करती है क्योंकि यह सभी लोगों के लिए हर समय और हर जगह पर उसकी शक्ति और हस्तकला की गवाही देती है।

भजन 19:1 से 6, रोमियों 1:18 से 32. मुझे इसे थोड़ा पढ़ना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन मनुष्यों की सारी अभक्ति और अधर्म पर प्रकट होता है, जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं।

क्योंकि परमेश्वर के विषय में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उनके लिए प्रत्यक्ष है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें दिखाया है। क्योंकि उसके अदृश्य गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और ईश्वरीय स्वभाव, सृष्टि के निर्माण के समय से ही उसकी बनाई हुई वस्तुओं में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इससे उनके पास कोई बहाना नहीं रह जाता, और गलातियों 5 में शरीर के कामों के विपरीत, यहाँ सबसे पहले मूर्तिपूजा और फिर यौन पाप, इस बार विषमलैंगिक पाप हैं, और यह परमेश्वर के लोगों, परमेश्वर के प्राणियों को दिखाता है, जो आराधना और यौन जीवन दोनों में उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं।

सृष्टि भी परमेश्वर को महिमा प्रदान करती है क्योंकि यह उसकी राजसत्ता, शक्ति, भलाई, बुद्धि, प्रेम और सुन्दरता को प्रदर्शित करती है। उत्पत्ति 1:1 से 28, यशायाह 43:7, रोमियों 11:33 से 36। प्रकाशितवाक्य 4:11 सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की भूमिका को उसकी आराधना और महिमा के स्वागत से जोड़ता है।

मैं उद्धृत कर रहा हूँ, हमारे प्रभु और परमेश्वर, आप महिमा और आदर और सामर्थ्य पाने के योग्य हैं, क्योंकि आपने ही सब कुछ रचा है और आपकी ही इच्छा से वे अस्तित्व में आए और रचे गए। प्रकाशितवाक्य 4:11. वास्तव में, सनातन परमेश्वर सृष्टि से पहले से ही विद्यमान है।

भजन 90 श्लोक 2 और वह अकेला ही सभी चीज़ों को अस्तित्व में लाता है। वह पहले से मौजूद सामग्रियों के उपयोग के बिना बनाता है। इब्रानियों 11:3 उद्धरण के लिए, ब्रह्मांड परमेश्वर के वचन द्वारा बनाया गया था ताकि जो दिखाई देता है वह उन चीज़ों से बना हो जो दिखाई नहीं देती हैं।

इब्रानियों 11:3. परमेश्वर अपने वचन बोलकर सृष्टि करता है। "फिर उसने कहा, फिर परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो और उजियाला हो गया।" उत्पत्ति 1:3 और उत्पत्ति 1 में सात बार और। 2 पतरस 3:5 भी देखें। परमेश्वर मनुष्य को अपने वचनों को समझने और उनके प्रति प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाता है।

इसके अलावा, परमेश्वर पूरी वास्तविकता बनाता है, जो कि उत्पत्ति 1:1 में स्वर्ग और पृथ्वी का अर्थ है। वह सभी चीज़ों का निर्माण करता है। इफिसियों 3:9, प्रकाशितवाक्य 4:11, जिसमें सब कुछ "दृश्यमान और अदृश्य" शामिल है। कुलुस्सियों 1:16, एक श्लोक जो परमेश्वर के पुत्र को सृष्टि का वर्णन करता है।

यूहन्ना सकारात्मक बातों की पुष्टि करके और नकारात्मक बातों को नकारकर इस बात पर ज़ोर देता है। एक बार फिर, प्रभु यीशु के बारे में, यूहन्ना 1:3 में ज़्यादा सही ढंग से कहा गया है, बेशक, यीशु उनके अवतार के समय उनका मानवीय नाम है। व्यवस्था, वचन, ज्योति, सनातन पुत्र, उनके अवतार लेने से पहले, सभी चीज़ें उनके द्वारा सृजी गई थीं।

और जो कुछ सृजा गया है, उसमें से एक भी उसके बिना सृजा नहीं गया। यूहन्ना 1:3. त्रिदेव अविभाज्य रूप से सृष्टि का कार्य करते हैं, जैसे वे अविभाज्य रूप से हर जगह सभी कार्य करते हैं। अर्थात्, सृष्टि पिता का कार्य है।

1 कुरिन्थियों 8:6, प्रकाशितवाक्य 4:11. पुत्र, यूहन्ना 1:3, 1 कुरिन्थियों 8:6, कुलुस्सियों 1:16, इब्रानियों 1:2 और 10. और सृष्टि पवित्र आत्मा का कार्य है।

उत्पत्ति 1:2, अय्यूब 33:4. परमेश्वर अकेलेपन की भावना या संगति की आवश्यकता से सृष्टि नहीं करता है क्योंकि तीनों त्रित्ववादी व्यक्ति अनंत काल से एक दूसरे से प्रेम करते हैं। यूहन्ना 17:24 . परमेश्वर, पिता, सृष्टि का स्रोत है और पुत्र सृष्टि का अभिकर्ता है।

"एक ही परमेश्वर है, पिता। सब कुछ उसी से है, और हम उसके लिए अस्तित्व में हैं। और एक ही प्रभु है, यीशु मसीह। सब कुछ उसी के द्वारा है, और हम उसी के द्वारा अस्तित्व में हैं।" 1 कुरिन्थियों 8:9, 8:6, 1 कुरिन्थियों 8:6। परमेश्वर की आत्मा सृष्टि में भी सक्रिय है। उत्पत्ति 1:2, भजन 104।

सृष्टि में, जैसा कि हर चीज़ में होता है, परमेश्वर दोनों ही पारलौकिक और आसन्न है। वह अकेला ही सृष्टि से पहले मौजूद है और इस तरह इसके बाहर और ऊपर खड़ा है। वह अपनी सृष्टि में भी आसन्न है क्योंकि वह इसकी परवाह करता है, इसके करीब आता है, और अपने लोगों के साथ वाचा संबंध में प्रवेश करता है।

उत्सर्जवाद, सर्वेश्वरवाद और देववाद की त्रुटियों को अस्वीकार करता है। सृष्टि का ईसाई सिद्धांत अन्य त्रुटियों के अलावा इन त्रुटियों को भी अस्वीकार करता है: द्वैतवाद, उत्सर्जवाद, सर्वेश्वरवाद और देववाद।

द्वैतवाद का मानना है कि अच्छाई और बुराई के दो शाश्वत सिद्धांत हैं। यह न केवल यह मानता है कि अच्छाई और बुराई है, बल्कि वे दोनों शाश्वत सिद्धांत हैं। इसके विपरीत, सर्वशक्तिमान निर्माता ही अंतिम वास्तविकता है। बुराई ईश्वर के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाला शाश्वत सिद्धांत नहीं है, बल्कि ईश्वर की अच्छी रचना का एक विकृति, एक विचलन है।

उत्सर्जनवाद का मानना है कि दुनिया स्वयं ईश्वर का एक उत्सर्जन या विस्तार है। उनके पदार्थ का एक विस्तार, एक उत्सर्जन। इसके विपरीत, शास्त्र के अनुसार, निर्माता अपनी रचना से अलग है। यह उसका स्वयं का हिस्सा नहीं है। रचना उसके अस्तित्व का अतिप्रवाह नहीं है। बल्कि, वह जो अनंत काल से अकेला मौजूद है, अपने वचन से अपनी दुनिया को अस्तित्व में लाता है। यह उससे उतना ही अलग रहता है जितना कि रचना, जैसे कि प्राणी अपने निर्माता से अलग है।

सर्वेश्वरवाद ईश्वर और उसकी दुनिया को भ्रमित करता है। यह कहता है कि ईश्वर ही सब कुछ है, और सब कुछ ईश्वर है।

जबकि सर्वेश्वरवाद गलत तरीके से ईश्वर को उसकी दुनिया के बराबर मानता है, देववाद ईश्वर को

दुनिया से हटा देता है। यह सिखाता है कि सृष्टिकर्ता अपने संसार में मानवीय अंतर्दृष्टि के अनुसार, उसकी भागीदारी के बिना, अपने आप चलने की क्षमता का निर्माण करता है।

सृष्टि और विधान के सिद्धांत सर्वेश्वरवाद और देववाद दोनों का खंडन करते हैं। ईश्वर न केवल दुनिया बनाता है बल्कि इसे बनाए रखता है और इसका निर्देशन करता है। शायद मुझे इन चार त्रुटियों के साथ थोड़ा और करना चाहिए: द्वैतवाद, मानववाद, सर्वेश्वरवाद और देववाद।

द्वैतवाद न केवल यह कहता है कि वे अच्छे और बुरे हैं, बल्कि उत्पत्ति 3 में पतन के बाद से वे शास्त्र में मौजूद हैं। और जब ईश्वर के सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं, जिसमें मानवीय तत्व, मानवीय शत्रु शामिल हैं, जो नरक में अनन्त दंड भुगतने के द्वारा नष्ट हो जाते हैं, तो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में बुराई मौजूद नहीं होगी, जो कि नई सृष्टि के बाहर है, जिसमें कुछ भी अशुद्ध या पापपूर्ण नहीं है। बल्कि, द्वैतवाद कहता है कि न केवल जो सही है बल्कि यह भी कि पतन से लेकर पूर्णता तक, अच्छाई और बुराई मौजूद है।

इसमें कहा गया है कि अच्छाई और बुराई दोनों शाश्वत हैं। ईश्वर ऐसा नहीं है। पवित्र ईश्वर अकेला नहीं है। मैं हिचकिचाता हूँ क्योंकि हमने अभी कहा कि वह कभी अकेला नहीं होता। वह एक पवित्र त्रिमूर्ति है।

पवित्र त्रिमूर्ति अकेली नहीं है। द्वैतवाद के अनुसार, बुराई का एक और शाश्वत सिद्धांत है। और इस तरह, उस तरह से, अच्छाई और बुराई ज़रूरी हैं।

इनमें से कोई भी बाइबल की शिक्षा नहीं है। बुराई शाश्वत नहीं है। बुराई एक विचलन है, एक निराशा है, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह है, और उत्पत्ति 3 से पहले अस्तित्व में नहीं थी, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अनंत काल तक अस्तित्व में नहीं रहेगी।

नहीं, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की एक शाश्वत पवित्र त्रिमूर्ति हमेशा से अस्तित्व में है। बुराई हमेशा से उसकी चुनौती नहीं रही है। केवल ईश्वर ही ईश्वर है और शाश्वत है।

उत्सर्जकवाद का मानना है कि सृष्टि ईश्वर की सत्ता का अतिप्रवाह है। यह एक सत्तामूलक अतिप्रवाह है, ईश्वर जिस तत्व से बना है उसका एक आध्यात्मिक अतिप्रवाह है। यह बहुत अच्छा नहीं निकला।

यह ईश्वर के स्वयं के अस्तित्व का अतिप्रवाह है जो गलत है। निश्चित रूप से, सृष्टि का संबंध सृष्टिकर्ता से है, लेकिन यह सृष्टिकर्ता का विस्तारित रूप नहीं है, जो ब्रह्मांड से निकलता है। नहीं, नहीं, सृष्टिकर्ता और उसकी रचना के बीच एक अंतर है।

यह उसके अस्तित्व का उत्सर्जन नहीं है। यह उससे अलग है जिसने इसे बनाया है और जो इसके बाहर रहता है, इसे पार करता है, और इसके भीतर रहता है, लेकिन इसका हिस्सा नहीं है, आसन्न है। सर्वेश्वरवाद ईश्वर और उसकी दुनिया को भ्रमित करता है, और इसलिए यह गलत है।

ईश्वर अपनी दुनिया नहीं है। सब कुछ ईश्वर नहीं है। केवल ईश्वर ही अनंत काल से अस्तित्व में है, और वह अपनी सृष्टि को अस्तित्व में लाता है।

यह ईश्वर नहीं है। यह वह नहीं है। वह उससे बिलकुल अलग है।

उसने इसे बनाया है, और वही इसे चलाता है। वह इसे सुरक्षित रखता है और इसे चलाता है, लेकिन वह सृष्टि नहीं है। सर्वेश्वरवाद ईश्वर और उसकी दुनिया को भ्रमित करता है।

यदि यह ऐसा करता है, और यह करता है, तो द्वैतवाद ईश्वर और उसकी दुनिया को अलग कर देता है। यह सृष्टि के ईसाई सिद्धांत को सिखाता है, लेकिन फिर यह कहता है कि ईश्वर ने उस सृष्टि में ऐसे सिद्धांत बनाए हैं जिससे वह अपने आप चलती है। यह गलत है क्योंकि बाइबल की प्रस्तुति यह है कि सृष्टि के बाद ईश्वरीय शक्ति आती है।

ईश्वर अपने द्वारा बनाए गए संसार को बनाए रखता है और उसका निर्देशन करता है। यदि सर्वेश्वरवाद ईश्वर को उसके संसार से अवैध रूप से जोड़ता है, तो द्वैतवाद, मेरा मतलब है, ईश्वरवाद ईश्वर और उसके संसार को अवैध रूप से अलग करता है। सत्य सृष्टि और विधान है।

परमेश्वर के सृष्टि कार्य का मुख्य उद्देश्य उसकी अपनी महिमा है। रोमियों 11:36 में परमेश्वर के सृष्टि, विधान और पूर्णता के कार्यों पर विचार करते समय पौलुस इसकी पुष्टि करता है। क्योंकि उसी से सृष्टि, और उसी के द्वारा विधान, और उसी के लिए पूर्णता, सब कुछ है। उसी से, उसी के द्वारा, उसी के लिए सब कुछ है।

उसकी महिमा सदा-सदा होती रहे। आमीन। रोमियों 11:36। पौलुस ने कुलुस्सियों 1:16 में मसीह के बारे में भी लिखा है। सब कुछ उसी के द्वारा सृजा गया है, सृष्टि में वह पिता का प्रतिनिधि है, और उसके लिए, अर्थात् सब कुछ पुत्र की महिमा के लिए विद्यमान है।

जब पौलुस उसके लिए कहता है, तो उसका मतलब मसीह के उद्देश्यों और महिमा के लिए होता है। यह तथ्य कि शास्त्र परमेश्वर के सृष्टि के कार्य को बहुत अच्छा बताता है, उत्पत्ति 1:31, के बहुत बड़े निहितार्थ हैं। परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज़ आंतरिक रूप से अच्छी है, बुरी नहीं, जिसमें भौतिक चीज़ें भी शामिल हैं।

वास्तव में, मानव शरीर और कामुकता पापपूर्ण नहीं हैं, बल्कि ईश्वर की ओर से उपहार हैं जिनका उपयोग उसकी इच्छा के अनुसार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, तपस्वीवाद, यह विचार कि मानव शरीर के साथ कठोर व्यवहार करके पवित्रता प्राप्त की जाती है, गुमराह करने वाला है। जैसा कि पॉल सिखाता है, कुलुस्सियों 2:20-23, वह कहता है, उस स्थान पर यह ईश्वरीयता को बढ़ावा नहीं देता है।

तपस्वी कहते हैं कि पवित्रता शारीरिक इच्छाओं को नकार कर प्राप्त की जा सकती है। यह गलत है। भगवान ने दुनिया बनाई, उन्होंने हमें हमारी इच्छाएँ दी हैं, हमें उनका उपयोग उनकी महिमा के लिए उन तरीकों से करना चाहिए जो उन्होंने बताए हैं।

चूँकि मनुष्य सनातन सृष्टिकर्ता की रचनाएँ हैं, इसलिए हमारे पास महान उपहार और कई सीमाएँ दोनों हैं। उसने हमें महिमा और सम्मान का ताज पहनाया, भजन 8:5। और वह हमें अपने हाथों के कामों पर प्रभुत्व देता है, भजन 8:6। परमेश्वर ने हमें महिमा और सम्मान का ताज पहनाया। भजन 8 के संदर्भ में, यह आदम और हव्वा हैं जो पहले मनुष्य थे।

उसने उन्हें महिमा और सम्मान का ताज पहनाया और अपने हाथों के कामों पर उन्हें अधिकार दिया। यही बात हम पर भी लागू होती है, उनके वंशजों पर, उनकी संतानों पर। हमारी सृष्टि हमें उन उद्देश्यों को पूरा करने की बड़ी ज़िम्मेदारी देती है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है।

इनमें, प्रबंधकों के रूप में, परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए घर के रूप में संसार में एक अस्तित्वगत रुचि लेना शामिल है। वह हमें अद्भुत मन और शरीर देता है, जिससे हम उसका और उसकी सुंदर दुनिया का आनंद ले सकें। लेकिन केवल परमेश्वर ही आत्मनिर्भर और शाश्वत है।

और हम उसके द्वारा बनाए गए प्राणी हैं जो उस पर निर्भर हैं क्योंकि, उद्धारण, हम उसी में जीते हैं, चलते हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं, प्रेरितों के काम 17:28। हम सृष्टिकर्ता की उसके राजसी और प्यारे संसार के लिए भी प्रशंसा करते हैं, भजन 19 :1, भजन 38:1-9। उस संसार में अर्थ, एकता और समझदारी है और यह परमेश्वर की बुद्धि, शक्ति, भलाई, महिमा और सुंदरता की ओर इशारा करता है। हम सृष्टिकर्ता की उसके राजसी और प्यारे संसार के लिए प्रशंसा करते हैं, भजन 19:1, भजन 38:1-9। और उस संसार में अर्थ, एकता और समझदारी है और यह परमेश्वर की बुद्धि, शक्ति, भलाई, महिमा और सुंदरता की ओर इशारा करता है। सृष्टि के उस संक्षिप्त उपचार के साथ, हम प्रोविडेंस की ओर बढ़ते हैं।

हमारा ईश्वर इतिहास का मार्गदर्शन करता है, ईसाई धर्म का सिद्धांत प्रोविडेंस है। सृष्टि ईश्वर का मूल कार्य है जिसमें सभी चीजों को अस्तित्व में लाया जाता है, जबकि प्रोविडेंस उसका निरंतर कार्य है जो उसकी रचना को बनाए रखता है और निर्देशित करता है। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज़्म प्रोविडेंस को अच्छी तरह से परिभाषित करता है और इस सवाल का जवाब देता है कि ईश्वर का प्रोविडेंस क्या है? कैटेचिज़्म कहता है कि प्रोविडेंस ईश्वर का सबसे पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, जो अपने सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों को संरक्षित और नियंत्रित करता है।

यह वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज़्म के प्रश्न 11 का उत्तर है। इसका प्रावधान ईश्वर का सबसे पवित्र, बुद्धिमान और शक्तिशाली है, जो अपने सभी प्राणियों और उनके सभी कार्यों को संरक्षित और नियंत्रित करता है। जैसा कि हम देखेंगे, प्रावधान के दो पहलू ईश्वर का संरक्षण, संरक्षण और शासन, सरकार हैं।

इसके अलावा, शॉर्टर कैटेचिज़्म ईश्वर के तीन सबसे महत्वपूर्ण गुणों को चुनता है, ईश्वर के गुण जो उसके प्रोविडेंस के कार्य को सूचित करते हैं। प्रोविडेंस ईश्वर का सबसे पवित्र है, जो सभी चीजों को संरक्षित और नियंत्रित करता है, उसका सबसे बुद्धिमान, संरक्षण और शासन, और उसका सबसे शक्तिशाली, जो सभी चीजों और उनके सभी कार्यों को संरक्षित और नियंत्रित करता है। प्रोविडेंस में संरक्षण और शासन दोनों शामिल हैं।

संरक्षण परमेश्वर का अपनी सृष्टि को बनाए रखने का कार्य है, जिसके लिए पुराने और नए नियम दोनों ही गवाही देते हैं। भजन 104, भजन 104, पद 10 से शुरू होता है। आप घाटियों में झरने फूटने देते हैं।

वे पहाड़ियों के बीच बहती हैं। वे मैदान के हर जानवर को पानी पिलाती हैं। जंगली गधे अपनी प्यास बुझाते हैं।

उनके पास आकाश के पक्षी रहते हैं। वे शाखाओं के बीच गाते हैं। अपने ऊँचे निवास से, आप पहाड़ों को सींचते हैं।

पृथ्वी तेरे काम के फल से तृप्त होती है। तू पशुओं के लिए घास और मनुष्यों के लिए खेती के लिए पौधे उगाता है। भजन 104, श्लोक 14।

ताकि वह धरती से भोजन और मनुष्य के दिल को खुश करने के लिए दाखमधु, उसके चेहरे पर चमक लाने के लिए तेल और मनुष्य के दिल को मजबूत करने के लिए रोटी पैदा करे। यहोवा के वृक्षों को बहुतायत से पानी मिलता है, जैसे लेबनान के देवदारों को जो उसने लगाए थे। पक्षी उसमें अपने घोंसले बनाते हैं।

सारस का घर देवदार के पेड़ों में है। ऊँचे पहाड़ जंगली बकरियों के लिए हैं। चट्टानें रॉक बेजरों के लिए शरणस्थली हैं।

उसने चाँद को मौसमों को चिह्नित करने के लिए बनाया। सूरज को पता है कि यह अस्त होने का समय है। तुम अंधकार बनाते हो, और रात होती है जब जंगल के सभी जानवर इधर-उधर रेंगते हैं।

युवा शेर अपने शिकार के लिए दहाड़ते हैं, भगवान से अपना भोजन मांगते हैं। जब सूरज उगता है, तो वे चुपके से भाग जाते हैं और अपनी मांद में लेट जाते हैं। मनुष्य शाम तक अपने काम और मेहनत के लिए बाहर जाता है।

हे प्रभु, आपके कार्य कितने विविध हैं। आपने अपनी बुद्धि से उन सभी को बनाया है। पृथ्वी आपके प्राणियों से भरी हुई है।

यहाँ समुद्र है, विशाल और विस्तृत, जो असंख्य प्राणियों से भरा हुआ है, छोटे और बड़े दोनों तरह के जीव। वहाँ जहाज़ और लेविथान हैं, जिन्हें तुम खेलने के लिए बनाते हो। ये सभी तुमसे उम्मीद करते हैं कि तुम उन्हें उचित समय पर भोजन दोगे।

जब आप उन्हें कुछ देते हैं, तो वे उसे इकट्ठा कर लेते हैं। जब आप अपना हाथ खोलते हैं, तो वे अच्छी चीज़ों से भर जाते हैं। जब आप अपना चेहरा छिपाते हैं, तो वे निराश हो जाते हैं।

जब आप उनकी सांसें छीन लेते हैं, तो वे मर जाते हैं और मिट्टी में मिल जाते हैं। जब आप अपनी आत्मा भेजते हैं, तो वे सृजित होते हैं, और आप धरती की सूरत को नया कर देते हैं। पुराने नियम का एक विस्तृत अंश, भजन 104, 10 से 30, परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि के संरक्षण की पुष्टि करता है।

हम पहले ही भजन 148:7 से 14 पढ़ चुके हैं। मैं इसे फिर से नहीं पढ़ूंगा। कुलुस्सियों 1:17, मसीह के द्वारा, सूर्य के द्वारा, सभी चीजें एक साथ रहती हैं।

इब्रानियों 1:3, वह अपने शक्तिशाली वचन से सभी चीजों को संभालता है। ये अंतिम दो, दोनों मसीह के हैं। परमेश्वर का संरक्षण विशेष रूप से उसके लोगों से संबंधित है जिन्हें वह प्यार करता है, बचाता है, और अपनी योजना के अनुसार रखता है।

भजन 23, मैं यहोवा के भवन में सदा वास करूंगा। यशायाह 40:11. यशायाह 40:27 से 31.

रोमियों 8:28 से 39. मसीह यीशु में जो लोग हैं, उनके लिए कोई दण्ड नहीं है। हमारे प्रभु मसीह यीशु में परमेश्वर के प्रेम से हमें कोई भी अलग नहीं कर सकता।

1 यूहन्ना 5:18. सरकार बनाना परमेश्वर का काम है, अगर संरक्षण उसकी सृष्टि को बनाए रखने और सुरक्षित रखने का उसका काम है। सरकार बनाना परमेश्वर का काम है, अपनी सृष्टि को उसके लक्ष्यों की ओर निर्देशित करना, जिसकी पुष्टि शास्त्र भरपूर करता है।

भजन 33:10 से 22. यशायाह 40:22 से 26. दानिय्येल 4:34 और 35.

प्रेरितों के काम 4:23 से 31. प्रेरितों के काम 14:12 से 17. भजन 33, पद 10 से शुरू। मैं इनमें से कुछ को चुनकर पढ़ रहा हूँ और बाकी के संदर्भों को दोहरा रहा हूँ।

भजन 33:10. यहोवा राष्ट्रों की युक्तियों को निष्फल कर देता है। वह लोगों की योजनाओं को विफल कर देता है।

यहोवा की युक्ति सदा स्थिर रहती है। उसके मन की युक्ति पीढ़ी पीढ़ी तक बनी रहती है। धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है।

वे लोग जिन्हें उसने अपनी विरासत के रूप में चुना है। प्रभु स्वर्ग से नीचे देखता है। वह मनुष्य के सभी बच्चों को देखता है।

वह जहाँ सिंहासन पर बैठा है, वहाँ से वह पृथ्वी के सभी निवासियों पर नज़र रखता है। वह जो उन सभी के दिलों को जोड़ता है, उन सभी के दिलों को आकार देता है, और उनके सभी कामों को देखता है। राजा अपनी विशाल सेना से नहीं बच पाता।

योद्धा अपनी महान शक्ति से नहीं बच सकता। युद्ध का घोड़ा मुक्ति की झूठी उम्मीद है। और अपनी महान शक्ति से भी वह बचा नहीं सकता।

देखो, यहोवा की नज़र उन पर है जो उससे डरते हैं। उन पर जो उसके अटल प्रेम की आशा रखते हैं कि वह उनकी आत्मा को मृत्यु से बचाए और अकाल में उन्हें जीवित रखे। हमारी आत्मा यहोवा की प्रतीक्षा करती है।

वह हमारी सहायता और हमारी ढाल है। क्योंकि हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित है, क्योंकि हम उसके पवित्र नाम पर भरोसा करते हैं। हे प्रभु, जैसे हम तुझ पर आशा रखते हैं, वैसे ही तेरा दृढ़ प्रेम हम पर भी बना रहे।

वह भजन 33:10 से 22 था। मैं दोहराता हूँ, यशायाह 40:22 से 26। दानिय्येल 4:34, 35।

प्रेरितों के काम 4:23 से 31. प्रेरितों के काम 14:12 से 17. संरक्षण और सरकार के अलावा, प्रोविडेंस में सहमति भी शामिल है, जिसमें परमेश्वर कार्य करता है, और उसके प्राणी उसके इच्छित उद्देश्यों के लिए कार्य करते हैं।

ईश्वर हमेशा अपने प्रत्यक्ष कार्यों से इतिहास का मार्गदर्शन नहीं करता है, बल्कि अक्सर लोगों की स्वतंत्र क्रियाओं और अन्य गौण कारणों का उपयोग करता है। पवित्रशास्त्र इस विचार को दर्शाता है, जिसमें जोर दिया गया है कि ईश्वर मानवीय एजेंटों का उपयोग करता है। उत्पत्ति 1, 26 से 30।

2 शमूएल 12:1 से 15. यूहन्ना 6:1 से 13. प्रेरितों के काम 1:5. परमेश्वर राष्ट्रों का उपयोग करता है।

यशायाह 1:10. यशायाह 10:5 से 11. एज्रा 1. परमेश्वर प्राणियों का उपयोग करता है।

भजन 104. स्वर्गदूत। उत्पत्ति 16:6 से 14.

लूका 1:26 से 38 और अधिक। परमेश्वर की कृपा उसकी सृष्टि के हर क्षेत्र तक फैली हुई है। ब्रह्मांड, प्रकृति, लोगों का जीवन, शैतान और स्वर्गदूत, राष्ट्र, जानवर, दुर्घटनाएँ, स्वतंत्र कार्य और पापपूर्ण कार्य।

यह सब लुईस बिरखॉफ की सिस्टमैटिक थियोलॉजी, पृष्ठ 168 से लिया गया है। मैं फिर से इसे पढ़ने जा रहा हूँ और शास्त्रों के संदर्भ देने जा रहा हूँ। उत्पत्ति।

परमेश्वर की कृपा उसकी सृष्टि के हर क्षेत्र तक फैली हुई है। ब्रह्माण्ड। भजन 103:19.

प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है, और उसका राज्य सब पर शासन करता है। दानिय्येल 4:35. इफिसियों 1:11.

परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करता है। प्रकृति या सृष्टि। अय्यूब 37:5 और 10.

भजन 104:14. भजन 135:6. मत्ती 5:45. मत्ती 6:25 से 30.

अय्यूब 37:5 और 10. भजन 104:14. भजन 135:6. मत्ती 5:45.

मत्ती 6:25 से 30. शैतान और स्वर्गदूत। परमेश्वर का विधान उन पर है।

अय्यूब 1:12. शैतान अय्यूब को केवल परमेश्वर की अनुमति से ही नुकसान पहुँचा सकता है।
भजन 103:20 और 21.

लूका 22:31. शैतान और स्वर्गदूत परमेश्वर के विधान के अधीन हैं। अय्यूब 1:12.

भजन 103:20 और 21. लूका 22:31. राष्ट्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की कृपा के अधीन हैं।

अय्यूब 12:23. नीतिवचन 22:28. क्षमा करें, यह भजन संहिता 22:28 है, नीतिवचन नहीं।

भजन 66:7. प्रेरितों के काम 17:26. राष्ट्र. अय्यूब 12:23.

भजन 22:28. भजन 66:7. प्रेरितों के काम 17:26. परमेश्वर की कृपा पशुओं पर भी लागू होती है।

1 राजा 17:4 से 6. भजन 104:21, 28. मत्ती 6:26. मत्ती 10:29.

पशु। 1 राजा 17:4 से 6. भजन 104:21 और 28. मत्ती 6:26.

मत्ती 10:29. परमेश्वर की कृपा दुर्घटनाओं पर भी लागू होती है। नीतिवचन 16:33.

योना 1:7. मत्ती 10:29. दुर्घटनाएँ. नीतिवचन 16:33.

योना 1:7. मत्ती 10:29. मनुष्य के स्वतंत्र कार्यों पर. उत्पत्ति 45:5. निर्गमन 10:1 और 20.

यशायाह 10 :5 से 7. प्रेरितों के काम 4:27 से 28. स्वतंत्र कार्य. उत्पत्ति 45:5. निर्गमन 10:1 और 20.

यशायाह 10:5 से 7. प्रेरितों के काम 4:27 और 28. परमेश्वर की कृपा मनुष्य के पापपूर्ण कार्यों पर भी लागू होती है। उत्पत्ति 50, पद 20.

निर्गमन 14:17. प्रेरितों के काम 2:22 से 24. 2 थिस्सलुनीकियों 2:11.

परमेश्वर का विधान उसकी महानता, बुद्धि, शक्ति, सत्य, न्याय और अनुग्रह को दर्शाता है। और उसका विधान हमारी प्रशंसा, प्रसन्नता, आत्मविश्वास, भरोसा, भय, और बुद्धि को प्रेरित करता है।
भजन 111.

एक बार फिर। पापपूर्ण कार्य। उत्पत्ति 50, श्लोक 20।

निर्गमन 14:17. प्रेरितों के काम 2:22 से 24. 2 थिस्सलुनीकियों 2:11.

मैं फिर कहता हूँ कि परमेश्वर की कृपा उसकी महानता, बुद्धि, शक्ति, सत्य, न्याय और अनुग्रह को दर्शाती है। और उसकी कृपा हमारी प्रशंसा, प्रसन्नता, आत्मविश्वास, भरोसा, भय, भय और बुद्धि को प्रेरित करती है। भजन 111.

हम अपने अगले व्याख्यान में, अपने आखिरी व्याख्यान में, ईश्वर के प्राणियों, स्वर्गदूतों के बारे में बात करेंगे, जिनमें से कुछ ने, बेशक, विद्रोह किया।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा धर्मशास्त्र, या ईश्वर पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 19 है, ईश्वर के कार्य, सृष्टि और प्रोविडेंस।